Result Mitra Daily Magazine

महाराजा रणजीत सिंह

➢ हालिया संदर्भ :

- 13 नवंबर को महाराजा रणजीत सिंह की जयंती है।
- उनका जन्म वर्ष 1780 में गुजरांवाला (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था।
- इन्होंने लगभग 4 दशक (1801–1839) तक पंजाब क्षेत्र पर शासन किया तथा अपनी मृत्यु के समय वे भारत में बचे एकमात्र संप्रभु शासक थे। अन्य सभी भारतीय शासक किसी न किसी तरह ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में थे।

➢ मुख्य बातें :

- 1799 में महाराज रणजीत सिंह ने लाहौर पर विजय प्राप्त करने के बाद एक एकीकृत सिख साम्राज्य की स्थापना की।
- उन्होंने कई शक्तिशाली शासकों को बुरी तरह पराजित किया, जिन्होंने क्षेत्र को कई मिसलों में विभाजित कर दिया था।
- महाराजा स्वयं 12 मिसलों में से एक सुकरचकिया मिसल संबंधित थे।
- महाराजा को 'शेर–ए–पंजाब' की उपाधि प्रदान की गई थी, क्योंकि उन्होंने क्षेत्र में अफगानी आक्रमणकारियों के प्रभाव को रोका था।

➢ साम्राज्य विस्तार :

- महाराजा का अंतर–क्षेत्रीय साम्राज्य कई राज्यों में फैला हुआ था।
- उनके साम्राज्य में मुल्तान एवं लाहौर के पूर्व मुगलिया प्रांतों के अलावा पूरा पेशावर एवं काबुल का कुछ हिस्सा भी शामिल था।
- उत्तर–पूर्व में इनका साम्राज्य लद्दाख तक विस्तृत था, जो जम्मू के एक सेनापति जोरावर सिंह द्वारा रणजीत सिंह के नाम पर विजित किया गया था।
- इनका साम्राज्य उत्तर–पश्चिम में खैबर दर्रे एवं दक्षिण में 'पंचनद'(जहां पांच नदियां, सिंधु में मिलती हैं) तक विस्तृत था।

  Note :– इनके शासन के दौरान पंजाब 5 नहीं बल्कि 6 नदियों का राज्य/देश था, जिसमें सिंधु छठी नदी थी।

  Note :– इन्होंने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया, जो मृत्युपर्यंत इनकी राजधानी बनी रही।

- महाराजा ने अपने साम्राज्य में बसे मुसलमान एवं हिंदू के बीच एक कुशल एवं विश्वासपात्र शासक के रूप में शासन किया।

➢ धार्मिक कार्य :

- इन्होंने सिख धार्मिक स्थलों को पुनर्जीवित करने के लिए सार्वजनिक अभियान शुरू किया।
- इन्होंने हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का संगमरमर (1809) एवं सोने (1830) से पुनर्निर्माण करवाया।
- साथ ही इन्होंने वाराणसी स्थित भगवान शिव की हिंदू काशी विश्वनाथ मंदिर को सोने से मढ़ने के लिए एक टन सोना दान में दिया।
- उन्होंने अन्य हिंदू मंदिरों, मुस्लिम मस्जिदों एवं सूफी तीर्थ स्थलों को भी संरक्षण प्रदान किया।
- इसके अलावा इन्होंने हिंदू संवेदनाओं को ध्यान में रखते हुए गौ–वध पर प्रतिबंध लगा दिया।
- इनके साम्राज्य में जबरन धर्मांतरण की मान्यता नहीं थी तथा विशिष्ट यह है कि इन्होंने अपनी हिंदू एवं मुस्लिम पत्नियों को धार्मिक आचरण की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की थी।

➢ अमृतसर की संधि :

- 1809 में ईस्ट इंडिया कंपनी एवं महाराजा के बीच हुए इस संधि ने सतलज नदी दोनों के लिए साम्राज्य का सीमांकन किया।

- रणजीत सिंह ने अंग्रेजों को पराजित करने के उद्देश्य से अपनी सेना में फ्रांसीसी एवं इतावली सैनिकों की भर्ती करवाई, जिन्होंने फ्रांसीसी जनरल नेपोलियन बोनापार्ट के लिए कई लड़ाइयां लड़ी थी।
- इन्होंने 'फौज–ए–खास' ब्रिगेड का गठन किया, जिसका नेतृत्व जीन बैप्टिस्ट बेंचुरा, जीन फ्रैंकोइस एलार्ड, ऑगस्टे का एवं पाओले एविटाविले जैसे यूरोपीय जनरलों ने किया।

➢ विशेष तथ्य :

- 2020 में BBC वर्ल्ड हिस्ट्रीज मैगजीन द्वारा करवाए गए एक सर्वे में महाराजा रणजीत सिंह को 'सर्वकालिक महानतम नेता' के रूप में चुना गया। इसमें विस्टन चर्चिल भी एक दावेदार थे।
- वर्ष 2016 में फ्रांस के शहर सेंट ट्रोपेज में इनके सम्मान में एक कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया गया।

➢ मृत्यु के बाद :

- महाराजा की मृत्यु के बाद ही अंग्रेजों ने क्षेत्र में सैन्य उपस्थिति दर्ज करनी शुरू कर दी, जिसके फलस्वरुप 1845–46 के दौरान प्रथम आंग्ल–सिख युद्ध हुआ, जिसमें सिखों की हार हुई और जम्मू–कश्मीर को ब्रिटिश–अधीन एक अलग रियासत माना गया।
- 1849 में सिखों की निर्णायक हार हुई, जिसके बाद 10 वर्षीय महाराजा दलीप सिंह अंग्रेजों के पेंशनभोगी बन गए।
- दलीप सिंह ने अपना बाकी का जीवन लंदन में निर्वासित रूप में व्यतीत किया।
- वर्तमान समय में भी ब्रिटिश ताज की शोभा बढ़ाने वाला कोहिनूर हीरा अंग्रेज को दलीप सिंह से ही प्राप्त हुआ था।

Result Mitra